Analysis) करते हैं।

(2) अन्तःक्रिया क्रम (Interaction Order)

गोफमेन को सूक्ष्म सामाजिक प्रक्रियाओं का सृजनात्मक विश्लेषक कहा जाता है। उन्होंने 1982 में, अपनी मृत्यु से पूर्व, जब वे कैंसर से पीड़ित थे, अपने अध्ययन क्षेत्र को स्पष्ट किया।

वास्तव में उन्हें अमेरिका के समाजशास्त्रीय परिषद के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष के नाते व्याख्यान देना था। वे व्याख्यान तो नहीं दे पाये लेकिन जो अपना पर्चा (शोध पत्र) तैयार किया, जिसे बाद में *अमेरिकन सोशिलोजिकल रिव्यू* में प्रकाशित किया गया, में कहा था कि प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया में महत्वपूर्ण तथ्य रूबरू होने वाली सामाजिक अन्तःक्रियाएं है। *यह वह अन्तःक्रिया है जिसमें दो या अधिक व्यक्ति भौतिक रूप से एक-दूसरे के सामने उपस्थित होते हैं।* उनका अध्यक्षीय भाषण जो रिव्यू में छपा है, उसमें उन्होंने अपने सिद्धान्त के सम्पूर्ण सार को अन्तःक्रिया क्रम (Order) में रखा है। अन्तःक्रिया क्रम के निम्न लक्षण है :

1. *व्यक्ति (Persons)*: इसमें दो या अधिक व्यक्ति हो सकते हैं। समूह, भीड़, कतार ये सभी व्यक्ति में सम्मिलित हैं।
2. *सम्पर्क (Contact)*: इसके कई माध्यम है। सामान्य माध्यम तो यह है कि शारीरिक रूप से व्यक्तियों का सम्पर्क होता है। सम्पर्क टेलिफोन लेख, पत्र, सिनेमा, आदि माध्यमों द्वारा भी हो सकता है।
3. *मुठभेड़ (Encounter)*: जब मुठभेड़ (मिलन) होती है तो इसमें मौखिक संचार होता है, मुठभेड़ करने वाले पारस्परिक रूप से एक-दूसरे के प्रति सरोकार रखते हैं, इनमें हम की भावना होती है, इत्यादि।
4. *मंच अभिनय (Platform Performance)*: इसमें दर्शकों या श्रोताओं के सामने जो भूमिका है, उसका निष्पादन किया जाता है। इसी कारण इसे अभिनय कहते हैं। इसके अन्तर्गत व्याख्यान, प्रतियोगिता, औपचारिक मिलन, नृत्य या संगीत प्रस्तुति इत्यादि हैं।
5. *सामाजिक प्रसंगों का अनुष्ठान (Celebirative' Social Occasions)*: सामाजिक अवसरों, प्रसंगों आदि अवसरों जिनमें व्यक्ति सामूहित रूप में भागीदारी करते हैं, मिलते-जुलते हैं। ऐसे प्रसंग शादी-ब्याह जन्मदिन, तिथि त्यौहार आदि है। यह ऐसा अवसर होता है जब बहुत बड़ी संख्या में लोग एक-दूसरे के साथ अन्तःक्रियाओं की अवधि लम्बे समय की भी होती है।

व्यक्ति सम्पर्क, कार्य निष्पादन, भेंट आदि सभी तत्व अनिवार्य रूप से अपनी प्रकृति में सूक्ष्म है। अन्तःक्रियाओं के इस क्रम में लोगों का प्रत्यक्ष मिलना होता है। उसका प्रभाव वृहद समूहों (Macro Groups) पर पड़ता है। आज के जटिल संगठन कितने ही जटिल हों, लेकिन उनकी निर्भरता सूक्ष्म समूहों पर रहती है। गोफमेन का तर्क है कि किसी भी संगठन के कार्यों का निष्पादन वास्तव में रूबरू मिलने वाले छोटे समूहों से ही होता है। ये छोटे समूह ही संगठन के महान उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

उपसंहार

प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया सिद्धान्त के जनक ब्लूमर थे, यद्यपि इसका प्रारम्भ हर्बर्ट मीड़ से है। इस सिद्धान्त की परम्परा इस तथ्य पर निर्भर है कि समाज के विकास का निर्वचन सूक्ष्म

प्रक्रियाओं द्वारा होता है। ये सूक्ष्म प्रक्रियाएं व्यक्ति या उस जैसे छोटे समूहों से होती है। समाज को समझने का यह उपागम प्रकार्यवादियों से भिन्न है। यह उपागम संघर्ष सिद्धान्तवेताओं से भी भिन्न है। प्रकार्यवादी और संघर्ष सिद्धान्तवेता इस मान्यता को लेकर चलते हैं कि कुछ *वृहद् प्रक्रियाएं* (Macro Processes) हैं जिनके विश्लेषण से समाज को समझा जा सकता है। प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद विनिमय सिद्धान्त से भी भिन्न है। अन्तःक्रियावाद न तो उपयोगितावाद को मानता है और न सामाजिक मनोविज्ञान को। इस सिद्धान्त का केन्द्र *स्व* (Self) है। स्व का विकास ही व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास है और एक ऐसी अवस्था आती है जब *स्व* की सूक्ष्म प्रक्रियाएं सामाजिक संरचना की वृहद् प्रक्रियाओं के साथ जुड़ जाती है और इस तरह हम स्व के माध्यम से सम्पूर्ण समाज को समझने में समर्थ हो जाते हैं।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद की परम्परा अमेरिका के समाजशास्त्रियों की परम्परा है। अन्तःक्रियावाद के मुख्यतः तीन विचारक है : जार्ज हर्बर्ट मीड़, हर्बर्ट ब्लूमर और इर्विंग गोफमेन। हर्बर्ट मीड ऐसे सिद्धान्तवेत्ता थे जिन्होंने व्यक्ति के विकास में *स्व* (Self) को महत्वपूर्ण भूमिका दी है। स्व *उद्दीपन* (Stimulus) के साथ अन्तःक्रिया करता है। इस अन्तःक्रिया में *स्व* यानि *मैं* (I) *मेरा* (me) में बदल जाता है। इस तरह व्यक्ति का विकास होता है और विकास के साथ-साथ ही प्रतीकों की संख्या भी बढ़ जाती है। प्रतीकों के माध्यम के बिना स्व अपने से बाहर की दुनिया को नहीं समझ सकता।

ब्लूमर के गुरू हर्बर्ट मीड थे। मीड का जो भी योगदान है उसमें निर्वचन, तीन बुनियादी आधार-वाक्य संरचना और प्रक्रिया तथा विधि है। ब्लूमर अपने समय के प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया सिद्धान्त के भीष्म पितामह रहे हैं। उन्होंने प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया को सामाजिक संरचना और प्रक्रिया के साथ जोड़ा है। होमन्स की तरह वे निगमनात्मक सिद्धान्त में विश्वास नहीं रखते। उनकी विधि तो आगमनात्मक सिद्धान्त निर्माण की है।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद की परम्परा में इर्विग गोफमेन, जो ब्लूमर के शिष्य रहे हैं का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका बहुत बड़ा योगदान अभिनय कला की अवधारणा को प्रस्तुत करना है। वे इस अवधारणा के साथ अन्तःक्रिया क्रम को जोड़ते हैं। गोफमेन मीड और ब्लूमर की तरह सामाजिक संरचना को नकारते हैं। अन्य प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावादियों की तरह गोफमेन भी अपने सिद्धान्त का केन्द्रीय बिन्दु व्यक्ति और उसके स्व को मानते हैं।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया सिद्धान्त पर अपनी टिप्पणी को उपसंहार में रखते हुए कुछ बातें निश्चित रूप से कही जा सकती है। पहली तो यह कि प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद सामाजिक संरचना के अस्तित्व को एकदम नकारता है। उसका मुख्य उपागम व्यक्ति को संरचना और समाज से पृथक करके देखने का है। इस प्रकार का सामाजिक संरचना विरोधी उपागम स्पष्ट है कि समाजशास्त्र की मुख्य धारा को रास नहीं आता।

इस प्रकार की उपेक्षा के होते हुये भी ऐसा लगता है, पिछले कुछ वर्षों में प्रतीकात्मक

अन्तःक्रियावाद के चरण आगे ही बढ़े हैं। इन सिद्धान्तवेताओं ने हाल में सिम्बोलिक इन्टरएक्शन (Symbolic Interaction) के नाम से एक जर्नल भी निकाला है। प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावादी व्यक्तिनिष्ठ अर्थ पर बराबर जोर देते हैं। इनका पूरा प्रयास *दूसरों की दुनिया* (World of the others) को स्व के माध्यम से समझना होता है। वे ऐसे समाजशास्त्रीय प्रश्नों को सामने रखते हैं जिनका उत्तर समाजशास्त्र की मुख्य धारा में भी नहीं होता। इस सिद्धान्त के पक्ष में अभावों के होते हुये भी यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस सिद्धान्त में कुछ विकल्प हैं जिनके द्वारा सम्पूर्ण समाज को समझने की हमारी कौशिश में थोड़ा-बहुत अतिरिक्त बल तो प्राप्त होता ही है। इसी कारण हमें यानि समाजशास्त्रियों को प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद के योगदान को हर प्रकार की मान्यता देनी चाहिये।